

## राजस्थान में जनघनत्व : एक भौगोलिक अध्ययन

### सारांश

भौतिक दृष्टि से चार भागों एवं राजनैतिक दृष्टि से 33 जिलों में विभक्त राजस्थान राज्य प्रागैतिहासिक काल से ही मानव बसाव का क्षेत्र रहा है। प्रस्तर युग में राजस्थान के द.पू. एवं उ.पू. भाग में बनास, बेड़च, गंभीरी, बाघन, चम्बल आदि नदियों की घाटियों में मानव बसाव के अनेक प्रमाण मिले हैं। इसी प्रकार कालीबंगा और आहड़ धातुयुगीन बसावट को प्रमाणित करती हैं। वैदिक काल में सरस्वती एवं दृषद्वती नदियों की घाटियों में आर्य संस्कृति के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार जनपदकालीन भारत में भी इस क्षेत्र में अनेक प्रसिद्ध जनपदों का होना यहाँ के जन बसाव को प्रमाणित करता है।

जनगणनाओं का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इस प्रदेश में निरन्तर जनघनत्व में वृद्धि हो रही है। 1901 में 30 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. जनसंख्या घनत्व वाले इस राज्य में 2011 में औसत जनघनत्व 201 व्यक्ति पहुँच गया है। जनसंख्या घनत्व के आँकड़ों तथा राज्य की भौतिक, सांस्कृतिक दशाओं का अवलोकन करने से पता चलता है कि कृषि प्रधान राजस्थान राज्य का जनसंख्या घनत्व प्रमुख रूप से वर्षा की मात्रा, सिंचाई साधनों की उपलब्धता, धरातलीय बनावट एवं मिट्टी का उपजाऊपन से प्रभावित हुआ है। इसके अलावा सड़क परिवहन की सुविधा, उद्योगों की स्थापना, खनिज उपलब्धता ने भी जनसंख्या घनत्व को प्रभावित किया है। अरावली शृंखला के पूर्वी भाग में जनसंख्या घनत्व का अधिक होना तथा इस शृंखला के पश्चिम में जनसंख्या घनत्व का सामान्यतया न्यून पाया जाना उक्त कारणों से ही है।



**साहस यादव**

पूर्व छात्र,  
भूगोल विभाग,  
बा.शो.रा.राज.कला महाविद्यालय,  
अलवर, राजस्थान

**मुख्य शब्द** : प्रागैतिहासिक काल, प्रस्तर युग, धातु युग, वैदिक काल, जनपद काल, आर्य— संस्कृति, जनगणना, जनघनत्व, भौतिक विभाग, सांस्कृतिक तत्त्व, विरल जनघनत्व, सघन जनघनत्व, गणितीय घनत्व, मानसूनी जलवायु, नदी—क्रम, शुष्क, अर्द्ध शुष्क, आर्द्र, उपाद्र, जलवायु प्रदेश, समवर्षा रेखा, धोरे।

### प्रस्तावना

#### राजस्थान का ऐतिहासिक परिचय

मरुस्थल या चट्टानों में दबे जीवाश्म या भू-गर्भ में दबे नमक के आकार अथवा मिट्टी के ढेर में सोई हुई बस्तियाँ तथा मन्दिर आदि का वैज्ञानिक अध्ययन इस निश्चय पर पहुँचाता है कि भारतीय प्राचीनतम बस्तियों में राजस्थान का एक महत्वपूर्ण स्थान है और उसकी गणना अनुमानतः एक लाख वर्ष प्राचीन प्रतीकों में की जा सकती है।<sup>1</sup>

बनास, बेड़च, गंभीरी, बाघन तथा चम्बल नदियों की घाटियों एवं इनके समीवर्ती तटीय स्थानों के पर्यवेक्षण से प्रमाणित हो चुका है कि दक्षिणी-पूर्वी एवं उत्तरी-पूर्वी राजस्थान के इस भाग में प्रस्तरयुगीन मानव रहता था।<sup>2</sup> कालीबंगा, आहड़ भी प्रस्तर-धातुयुग के राजस्थान में बसाव को प्रमाणित करती हैं। इतिहास के अनेक स्रोतों से स्पष्ट होता है कि वैदिक एवं जनपदकालीन भारत में भी इस प्रदेश की बड़ी महत्ता रही है।

सरस्वती एवं दृषद्वती नदियों के तटवर्ती भाग प्राचीन बसावट के प्रमुख केन्द्र रहे। धीरे-धीरे सरस्वती एवं दृषद्वती के तटीय भाग की प्राचीन बस्तियाँ वहाँ से हटकर पूर्व एवं दक्षिण की ओर किसी कारणवश बढ़ने लगीं और संभवतः आर्य जो बसाव स्थानों की खोज में इधर-उधर बढ़ रहे थे, इन नदियों की उपत्यकाओं में आकर बसने लगे। इंद्र और सोम की अर्चना के मंत्रों की रचना, यज्ञ की महत्ता की स्वीकृति और जीवन मुक्ति का ज्ञान आर्यों को इसी नदी की घाटी में निवास करते हुआ था, ऐसी विद्वानों की मान्यता है।<sup>3</sup>

तीसरी ईसा पूर्व से हमें यहाँ मुद्राएँ, अभिलेख, आभूषण, नगरों के खण्डर अधिक परिमाण में मिले हैं जिससे प्रमाणित होता है कि पूर्वी राजस्थान में ब्राह्मण एवं बौद्ध संस्कृति पनप रही थी। राजक्य जनपद, मत्स्य जनपद, शिव जनपद, शल्व जनपद आदि यहाँ के प्रमुख जनपद रहे हैं। गुप्तकाल,

राजपूतकाल में भी निरन्तर यहाँ जन बसाव बढ़ता गया। धरातलीय विविधता, जलस्रोत, मिट्टी एवं जलवायुगत भिन्नताएँ आदि भौगोलिक कारक यहाँ जनसंख्या के जमाव के क्षेत्रीय भिन्नता के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी रहे हैं। अनेक देशी राज्यों, रियासतों वाला यह राज्य एकीकरण के सात चरणों से गुजरता हुआ 01 नवम्बर 1956 को वर्तमान स्वरूप में आया।<sup>4</sup>

#### भौगोलिक स्थिति एवं भौगोलिक दशाएँ

यह राज्य 23°3' उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश एवं 69°30' से 78°17' पू. देशान्तर के मध्य स्थित है।<sup>5</sup> भारत के सर्वाधिक क्षेत्रफल वाले इस राज्य का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किमी. है जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत भाग है।<sup>6</sup>

राजनैतिक दृष्टि से 33 जिलों में विभक्त राजस्थान भौतिक दृष्टि से चार भागों क्रमशः पश्चिमी मरुस्थल, मध्यवर्ती पहाड़ी भाग, द.पू. पठार एवं पूर्वी मैदान में बँटा है। मानसूनी जलवायु वाला राजस्थान शुष्क, अर्द्धशुष्क, उपआर्द्र एवं आर्द्र जलवायु प्रदेशों में विभक्त है।<sup>7</sup> प्रो. थार्प एवं स्मिथ ने मृदा उत्पत्ति कारकों के आधार पर यहां की मिट्टियों के 8 प्रमुख प्रकार बतलाये हैं जो क्रमशः भूरी मृदा, सीरोजम मृदा, लाल-बलुई मृदा, लवणीय मृदा, लाल-दुमट मृदा, पहाड़ी मृदा, बलुई मृदा एवं जलोढ मृदा नाम से जाने जाते हैं।<sup>8</sup> यहाँ की नदियों को प्रमुख रूप से सात नदी क्रमों चम्बल नदी कम, माही नदी कम, लूनी नदी कम, साबरमती कम, बनास नदी कम, आन्तरिक प्रवाह कम एवं यमुना नदी कम में बाँटा गया है। यहाँ की अधिकांश नदियाँ मौसमी नदियों की श्रेणी में आती हैं। इनमें से अधिकांश में ग्रीष्मकाल में पानी सूख जाता है अथवा अत्यंत कम हो जाता है।

#### अध्ययन के उद्देश्य

1. राजस्थान में जनघनत्व की क्षेत्रीय भिन्नताओं का अध्ययन करना।
2. जनघनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाना।
3. जनघनत्व के कालिक परिवर्तनों का अध्ययन करना।
4. जनघनत्व के प्रादेशिक वितरण प्रतिरूप को जानना।

#### परिकल्पना

राजस्थान में जनसंख्या घनत्व यहाँ की औसत वार्षिक वर्षा की मात्रा का अनुगामी है।

#### विधितंत्र

प्रस्तुत शोध में भारतीय जनगणनाओं से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। सारणीयन,

तालिका सं. 01: राजस्थान जनसंख्या घनत्व व्यक्ति/वर्ग किमी.

वर्ष	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
व्यक्ति/वर्ग किमी.	30	32	30	34	41	47	59	75	100	129	165	201

स्रोत : जनगणना 1901 से 2011

मानचित्रीकरण, आरेख आदि द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं।

#### जनसंख्या घनत्व क्या है ?

किसी प्रदेश के क्षेत्रफल तथा उसकी जनसंख्या के पारस्परिक अनुपात को जनसंख्या घनत्व कहा जाता है। किसी प्रदेश का जनसंख्या घनत्व प्रधानतः प्राकृतिक संसाधनों एवं आर्थिक विकास की अवस्था पर निर्भर करता है।

#### जनसंख्या घनत्व के प्रकार

उद्देश्य के अनुसार जनसंख्या घनत्व के विभिन्न प्रकारों का उपयोग किया जाता है। जनसंख्या घनत्व के पाँच प्रमुख प्रकार हैं, जो निम्न हैं—

1. गणितीय घनत्व
2. कायिक घनत्व
3. कृषि घनत्व
4. पौष्टिक घनत्व
5. आर्थिक घनत्व

सामान्यतया हम जब किसी क्षेत्र के जनसंख्या घनत्व की चर्चा करते हैं तो उसका आशय गणितीय घनत्व (Arithmetic Density) से होता है। इसकी गणना करने हेतु कुल जनसंख्या तथा कुल क्षेत्रफल का अनुपात निकाला जाता है। गणितीय घनत्व निकालने का सूत्र निम्न है।<sup>9</sup>

$$\text{गणितीय घनत्व} = \frac{\text{कुल जनसंख्या}}{\text{कुल क्षेत्रफल}}$$

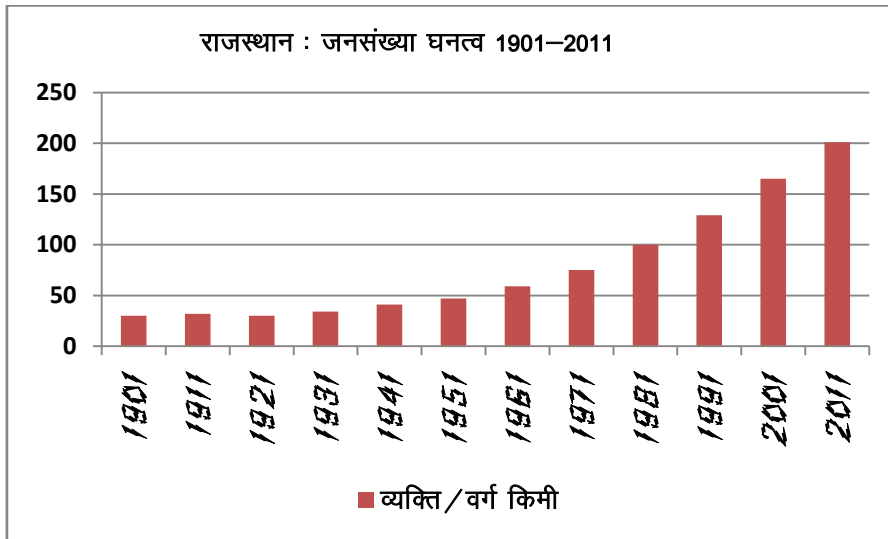
यहाँ हमने अपने अध्ययन में गणितीय घनत्व का ही प्रयोग किया है। जनगणना के आँकड़ें चूँकि प्रशासनिक इकाईवार एकत्र किए जाते हैं अतः राजनैतिक मानचित्रों के माध्यम से जनसंख्या घनत्व का वितरण प्रतिरूप समझना आसान हो जाता है।

#### राजस्थान में जनसंख्या घनत्व

राजस्थान जनगणना 2011 के अनुसार इस राज्य का औसत जनसंख्या घनत्व 201 व्यक्ति/वर्ग किमी. है जो वर्ष 2011 में भारत के औसत जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. से काफी कम है। देश में जनघनत्व की दृष्टि से राज्य का स्थान 18वाँ है।<sup>10</sup>

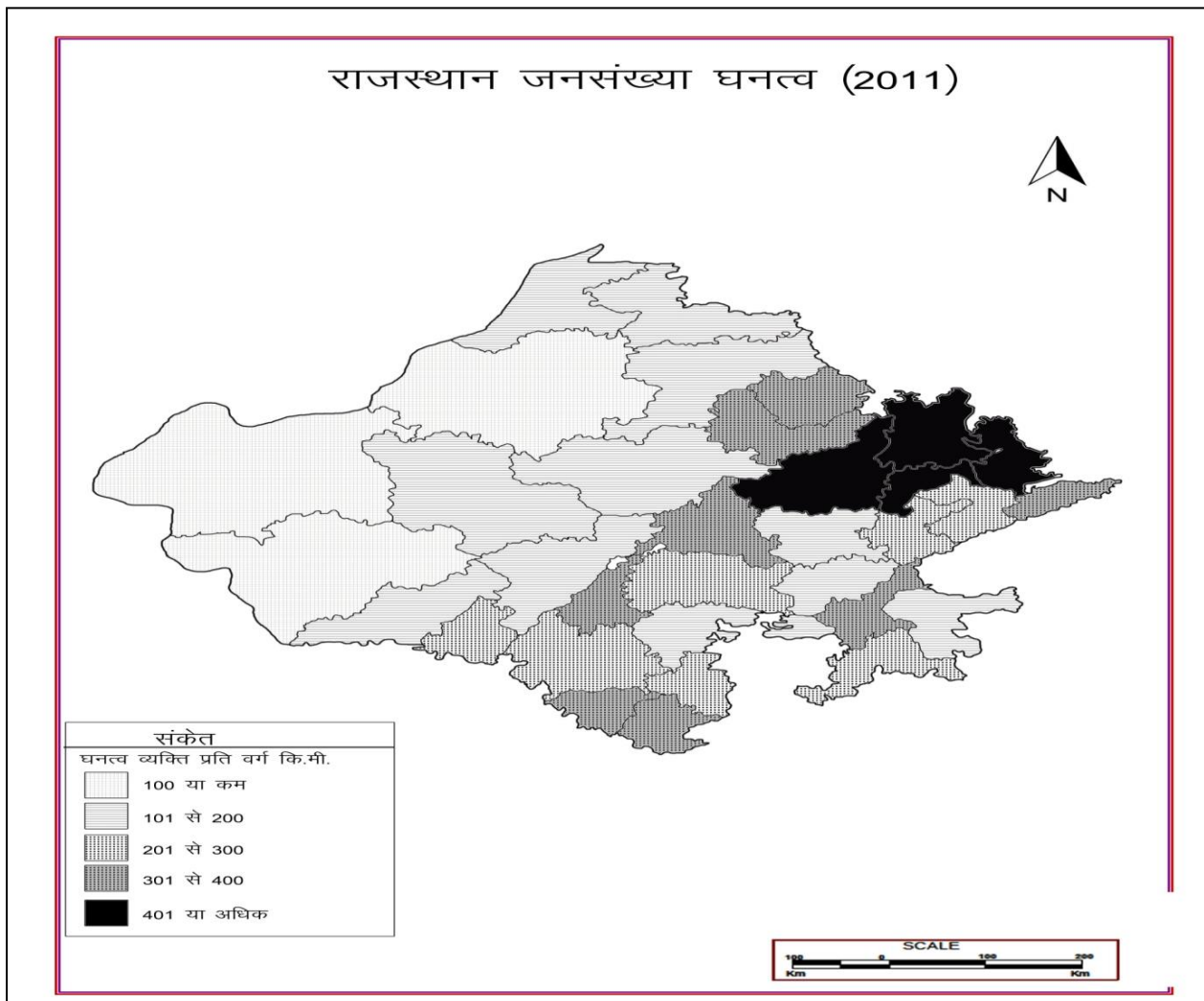
गत जनगणनाओं के आँकड़ों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि राज्य में 1901 से निरन्तर जनघनत्व बढ़ रहा है (1921 को छोड़कर)। तालिका 01 एवं आरेख 01 का अवलोकन करने से स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

आरेख सं. 01



तालिका 01 एवं आरेख 01 से स्पष्ट है कि 2001 एवं 2011 में बढ़कर क्रमशः 129, 165 तथा 201 हो गया। 1981 से राजस्थान का जनसंख्या घनत्व तेजी से बढ़ रहा है। 1981 में यहाँ जनसंख्या घनत्व 100 था जो 1991,

मानचित्र 01



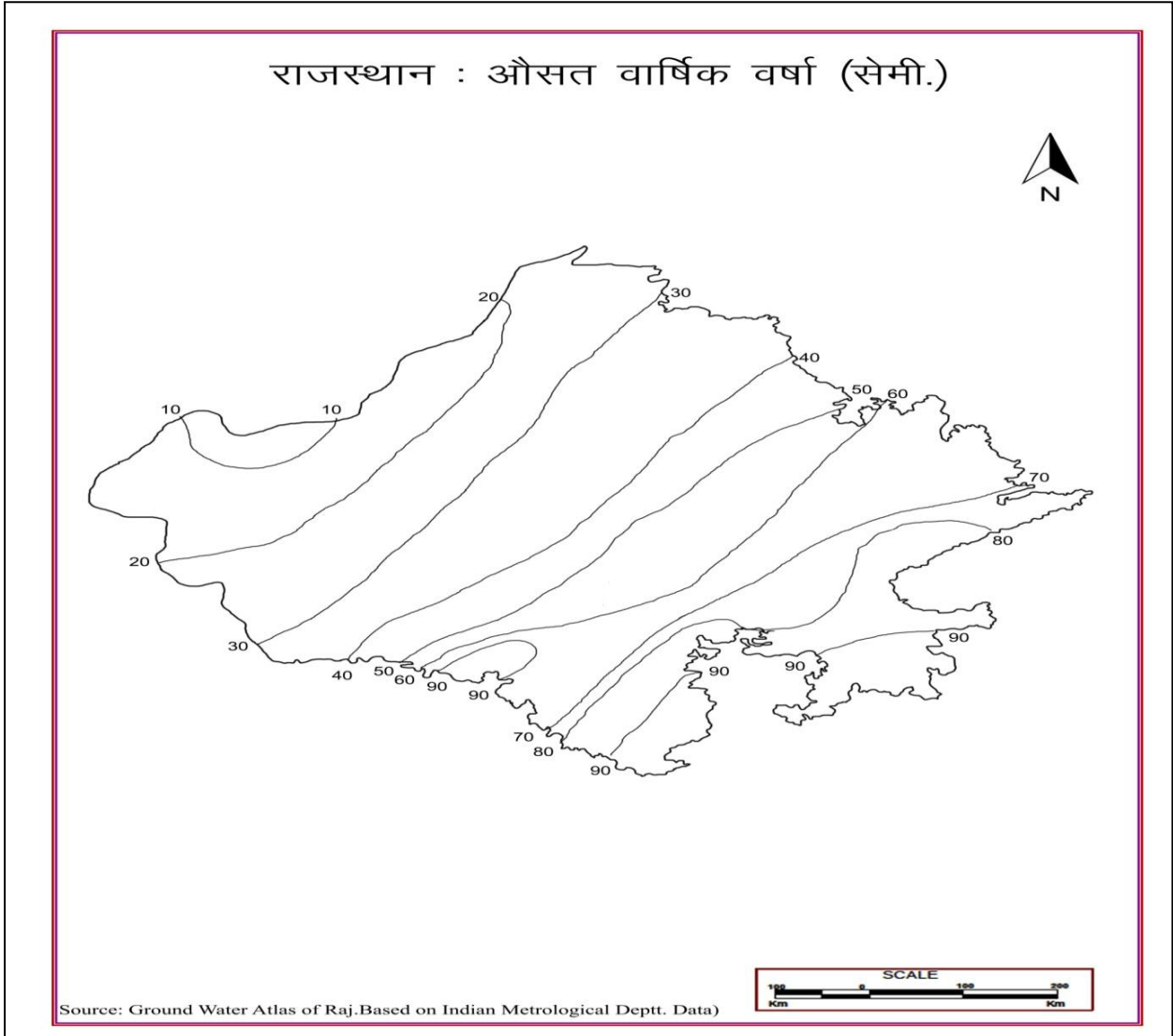
राजस्थान के मानचित्र पर जिलावार जनसंख्या घनत्व (2011) का अवलोकन करने से निम्न तथ्य सामने आते हैं—

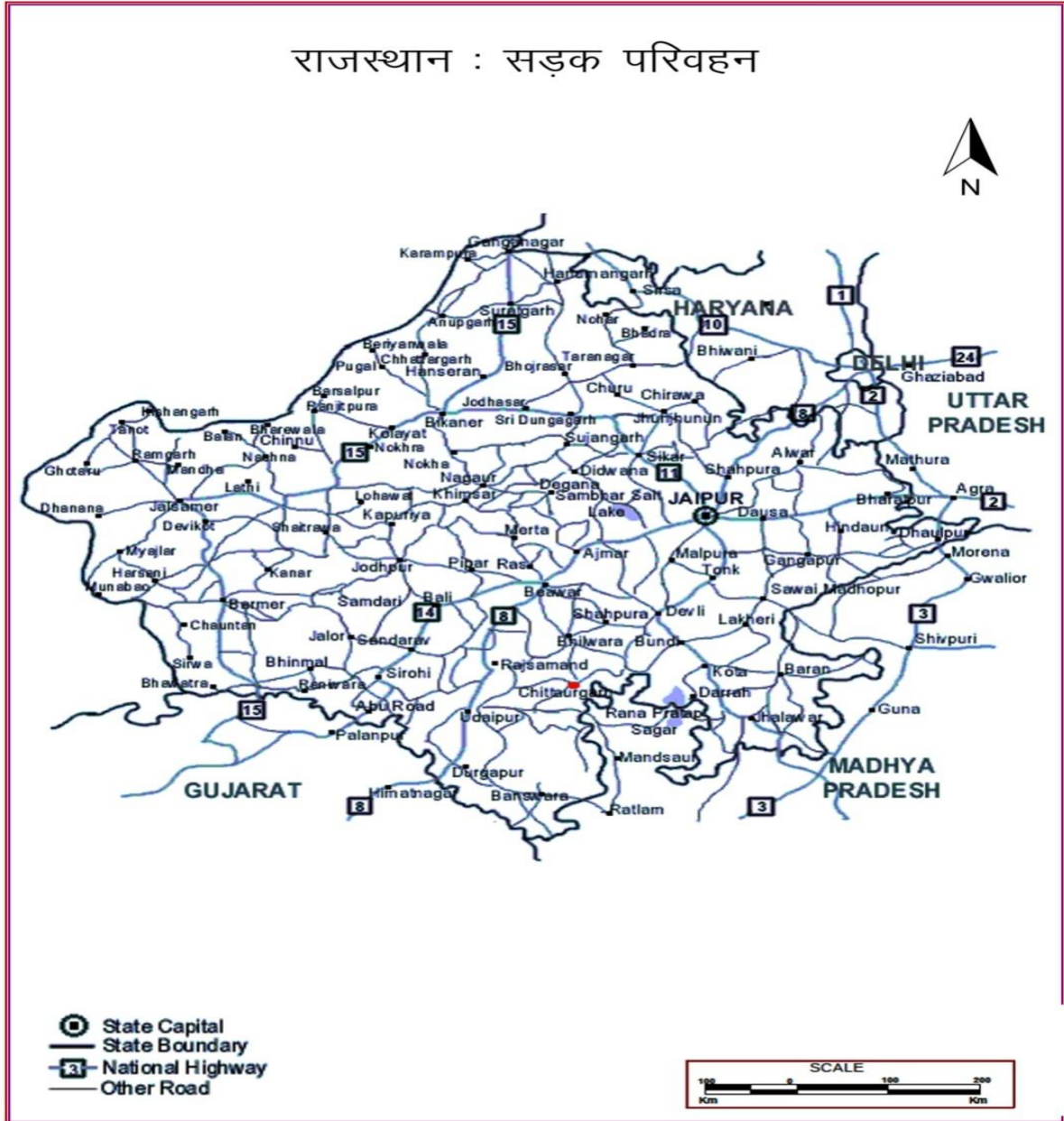
1. अरावली पर्वत शृंखला के पूर्व में अधिकांश जिलों का घनत्व 200 से अधिक है। इस भाग में केवल बारां (175), बूंदी एवं चित्तौड़गढ़ (193) एवं टोंक (198) 200 से कम घनत्व वाले जिले हैं। राज्य में सर्वाधिक घनत्व अरावली के पूर्व में स्थित जयपुर जिले का 598 है। सर्वाधिक घनत्व के पाँच जिले जयपुर (598), भरतपुर (503), दौसा (476), अलवर (438), बांसवाड़ा (399) अरावली के पूर्व में ही स्थित हैं। दूसरी तरफ राजस्थान के सबसे कम घनत्व वाले 05 जिले क्रमशः जैसलमेर (17), बीकानेर (78), बाड़मेर (92), चूरु (148) एवं जोधपुर (161) अरावली के पश्चिम में स्थित हैं। यहाँ उल्लेखनीय है कि राज्य से अरावली के सहारे गुजरने वाली 50 सेमी. समवर्षा रेखा से पूर्व

में औसत वार्षिक वर्षा 50 से 100 सेमी. के मध्य पाई जाती है जबकि अरावली के पश्चिम में वर्षा का वार्षिक औसत 50 सेमी. से कम है।

2. राजस्थान में जनसंख्या घनत्व में क्षेत्रीय भिन्नता दिखलाई देती है। वर्षा की अधिकता, समतल धरातल, उपजाऊ मिट्टी, पर्याप्त सिंचाई साधनों की उपलब्धता वाले जिलों में अधिक जनसंख्या घनत्व दिखाई देता है। मानचित्र 1 एवं 2 का अवलोकन करने से राजस्थान में जनसंख्या घनत्व एवं औसत वार्षिक वर्षा के मध्य सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है। औसत वार्षिक वर्षा सामान्यतया जनघनत्व में वृद्धि करता है, परन्तु अन्य भौतिक एवं सांस्कृतिक कारक स्थानीय रूप से अधिक प्रभावी हो जाने के कारण जनघनत्व प्रतिरूप बदल जाता है।

मानचित्र : 02





स्रोत : राजस्थान रोड़ एटलस

3. राजस्थान में सर्वाधिक सिंचाई कुओं एवं नलकूपों से (66.38%) होती है।<sup>11</sup> कुओं/नलकूपों से सिंचाई करने वाले जिलों में जयपुर, दौसा, भरतपुर, अलवर, धौलपुर, करोली, सवाई माधोपुर आदि जिले प्रमुख हैं। 2011 की जनगणनानुसार उच्च जन सघनता (400 व्यक्ति/वर्ग किमी. से अधिक) वाले चारों जिले जयपुर, भरतपुर, दौसा, अलवर नलकूप/कुओं से सिंचाई वाले क्षेत्र में आते हैं। जिन जिलों में नहरी सिंचाई की पर्याप्त सुविधा है, उन क्षेत्रों में भी जनघनत्व सघन दिखाई देता है। सिंचाई साधनों की कमी वाले जिलों में जनघनत्व कम पाया जाता है। अतः कह सकते हैं कि सिंचाई साधनों की पर्याप्त उपलब्धता जनसंख्या घनत्व को बढ़ा देती है। अतः

- उक्त दोनों तथ्यों के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध पाया जाता है।
4. मैदानी भागों में समतल भूमि होने के कारण कृषि कार्य आसान होता है। मैदानी भाग में परिवहन मार्ग बनाने (सड़क, रेलमार्ग) में भी सहूलियत रहती है। साथ ही इन क्षेत्रों में नलकूप, कुएँ बनाना, नहरें बनाना भी आसान एवं कम खर्चीला होता है। सामान्यतया मैदानी भागों की मिट्टी भी उपजाऊ होती है। अतः मैदानी भाग में जनसंख्या घनत्व अधिक पाया जाता है। राजस्थान में भी मैदानी जिलों में ही सर्वाधिक घनत्व (जयपुर, भरतपुर, दौसा, अलवर) में पाया जाता है। दूसरी तरफ मरुस्थलीय जिलों में जहाँ धरातल उबड़-खाबड़ है, साथ ही

मिट्टी में स्थिरता नहीं है वहाँ जनघनत्व भी कम पाया जाता है। जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

5. जिन क्षेत्रों में तकनीक का विकास हो रहा है वहाँ खनिजों की उपलब्धता एवं उद्योगों का विकास भी जनसंख्या जमाव में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। राजस्थान के प्रमुख औद्योगिक केन्द्रों में से अधिकांश अरावली के पूर्व में ही स्थित है। राजस्थान को औद्योगिक प्रदेशों की दृष्टि से प्रमुख रूप से दो भागों में बांटा गया है—द.पू. औद्योगिक क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र।

#### दक्षिणी-पूर्वी औद्योगिक क्षेत्र

इसके अन्तर्गत अग्रकित पाँच क्षेत्र आते हैं—

1. जयपुर औद्योगिक क्षेत्र,
2. अजमेर—ब्यावर औद्योगिक क्षेत्र
3. भीलवाड़ा—चित्तौड़गढ़—उदयपुर औद्योगिक क्षेत्र
4. कोटा—बूंदी—सवाई माधोपुर औद्योगिक क्षेत्र
5. अलवर—भरतपुर—धौलपुर औद्योगिक क्षेत्र।

#### पश्चिमी औद्योगिक क्षेत्र

इसके अन्तर्गत—

1. श्रीगंगानगर—हनुमानगढ़ औद्योगिक क्षेत्र
2. बीकानेर—पलाना क्षेत्र
3. मकराना—जोधपुर—पाली—पचपद्रा क्षेत्र आते हैं।<sup>12</sup>

राजस्थान के औद्योगिक क्षेत्रों में जनसंख्या जमाव अधिक पाया जाता है। अतः स्पष्ट है कि औद्योगिक विकास भी जनघनत्व में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

क्षेत्रीय असमानता को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान में राजस्थान को जनसंख्या घनत्व के निम्न 05 वर्गों में रखा जा सकता है—

#### राजस्थान में जनसंख्या घनत्व (2011)

घनत्व	जिलों के नाम (जो इस वर्ग में आते हैं)
उच्च विरलता वाला जनसंख्या क्षेत्र (100 व्यक्ति या कम)	जैसलमेर (17), बीकानेर (78), बाड़मेर (92)
विरल जनसंख्या वाला क्षेत्र (101 से 200 व्यक्ति)	चूरू (148), जोधपुर (161), पाली (165), जालोर (172), बारां (175), श्रीगंगानगर (179), हनुमानगढ़ (184), नागौर (187), चित्तौड़गढ़ (193), बूंदी (193), टोंक (198)
साधारण जनघनत्व वाला क्षेत्र (201 से 300 व्यक्ति)	सिरोही (202), प्रतापगढ़ (211), भीलवाड़ा (230), झालावाड़ (227), उदयपुर (242), करोली (264), सवाई माधोपुर (297)
सघन जनघनत्व वाला क्षेत्र (301 से 400 व्यक्ति)	राजसमन्द (302), अजमेर (305), सीकर (346), झुंझुनू (361), डूंगरपुर (368), कोटा (374), धौलपुर (398), बांसवाड़ा (399)
उच्च सघनता वाला क्षेत्र (401 या अधिक व्यक्ति)	जयपुर (598), भरतपुर (503), दौसा (476), अलवर (438)

स्रोत : जनगणना 2011, राजस्थान सरकार, जयपुर  
उच्च विरलता वाला क्षेत्र

(100 या कम व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.)

राज्य में 1961 से 2011 के जनगणना आंकड़ों का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि इस वर्ग में आने वाले जिलों की संख्या 2001 तक निरन्तर कम हो रही है। 1961 से 2011 में 100 से कम जनघनत्व वाले जिलों की संख्या क्रमशः 1961 (19), 1971 (15), 1981 (08), 1991 (05), 2001 (03) एवं 2011 (03)। स्पष्ट है राजस्थान में प्रत्येक जिले में जनसंख्या घनत्व निरन्तर बढ़ रहा है। वर्तमान में 33 में से मात्र 03 जिले उच्च विरलता वाले रह गये हैं। केवल जैसलमेर (17), बीकानेर (78), बाड़मेर (92) इस वर्ग में आते हैं। वर्षा (25 सेमी. से कम वार्षिक वर्षा) एवं सिंचाई की कमी, रेतीली मिट्टी, रेत के धोरों का खिसकाव, परिवहन मार्गों की कमी, उद्योग केन्द्रों की कमी, ऊँचा—नीचा धरातल यहाँ न्यून घनत्व के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं।

#### विरल जनघनत्व वाला क्षेत्र

(101 से 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.)

राज्य में लगातार सिंचाई साधनों के विस्तार के कारण कृषि कार्यों का विस्तार हो रहा है। अनेक सरकारी योजनाओं के कारण भी किसानों को कृषि संसाधन जुटाने में सहायता प्राप्त हो रही है। अतः जनघनत्व बढ़ते जाने के कारण इस श्रेणी के जिले में वृद्धि हो रही है। 1961 से 2001 तक की जनगणनाओं के आंकड़े बतलाते हैं कि राजस्थान में उच्च विरलता वाले जिले इस कालावधि में निरन्तर घटे हैं तथा उनका जनघनत्व बढ़ने से उनमें से अनेक जिले अब विरल जनघनत्व वाली श्रेणी में आ गए हैं। 101 से 200 जनघनत्व वाले जिले 1961 में (08) थे, जो 2001 में बढ़कर 15 हो गए। वर्तमान (2011) में ऐसे जिलों की संख्या 11 हैं क्योंकि 2001 से 2011 के दशक में जनघनत्व बढ़ा और कुछ जिले इस श्रेणी से उच्चतर जनघनत्व की श्रेणी में पहुँच गए।

#### साधारण जनघनत्व वाला क्षेत्र

(201 से 300 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.)

1981 की जनगणना के अनुसार इस श्रेणी में राज्य में केवल चार जिले जयपुर (243), भरतपुर (233), अलवर (211) एवं झुंझुनू (204) शामिल थे जबकि 1961 व 1971 में राज्य में एक भी जिला 200 से अधिक जनघनत्व वाला नहीं था। वर्तमान में 07 जिले करोली (264), सवाई माधोपुर (297), सिरोही (202), भीलवाड़ा (230), राजसमन्द (248), झालावाड़ (227), उदयपुर (262) साधारण जनघनत्व वाले जिलों की श्रेणी में आते हैं।

#### सघन जनघनत्व वाला क्षेत्र

(301 से 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.)

1991 से पूर्व राजस्थान में एक भी जिला इस श्रेणी में नहीं आता था। 1991 की जनगणना में प्रथम बार जयपुर (360) एवं भरतपुर (326) जिले इस की श्रेणी में आए। 2001 में 04 जिले अधिक जनघनत्व वाले थे। 2011 की जनगणनानुसार 08 जिले इस श्रेणी में हैं। इनमें झुंझुनू (361), धौलपुर (398), डूंगरपुर (368), बांसवाड़ा (399), अजमेर (305), कोटा (374), राजसमन्द (302), सीकर (346) शामिल हैं। इनमें सीकर एवं झुंझुनू 50 सेमी.

समवर्षा रेखा के पश्चिम में तथा शेष सभी 05 जिले उक्त रेखा के पूर्व में स्थित हैं।

#### उच्च सघनता वाला क्षेत्र

(400से अधिक व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.)

1991 तक राज्य के किसी भी जिले का जनसंख्या घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. से अधिक नहीं था। प्रथम बार 2001 में जयपुर एवं भरतपुर दो जिले इस श्रेणी में शामिल हुए। 2011 की जनगणनानुसार मत्स्यांचल के चार जिलों जयपुर, भरतपुर, दौसा, अलवर में जनसंख्या घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. से अधिक हो गया जो क्रमशः 598, 503, 476 एवं 438 था। ये चारों जिले मैदानी भाग में स्थित हैं जहाँ वर्षा का वार्षिक औसत 60 से 70 सेमी. है। औद्योगिक प्रादेशीकरण की दृष्टि से राजस्थान के दक्षिणी-पूर्वी औद्योगिक क्षेत्र में आते हैं जहाँ अनेक छोटी-बड़ी औद्योगिक इकाईयाँ स्थापित हैं, सड़क परिवहन सुविधाएँ पर्याप्त हैं तथा रेलमार्ग द्वारा देश के प्रमुख भागों से जुड़े हैं। यहाँ की मिट्टी दुमट, कछारी होने के कारण फसलोत्पादन के लिए बहुत अच्छी है। यहाँ सिंचाई के लिए कुएँ, ट्यूबवैल पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हैं। इन सब कारकों की अनुकूलता के कारण ही राजस्थान के इन जिलों में सर्वाधिक जनघनत्व पाया जाता है।

#### निष्कर्ष

राजस्थान राज्य की विभिन्न जनगणनाओं के आंकड़ों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि कृषि प्रधान इस राज्य के जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों में वर्षा की मात्रा, धरातलीय बनावट, सिंचाई सुविधाएँ, मिट्टी का उपजाऊपन, औद्योगिक विकास सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक हैं। प्रधानतः उक्त कारकों की अनुकूलता के कारण ही अरावली के पूर्व में स्थित जिलों का जनघनत्व, पश्चिमी जिलों के जनघनत्व से काफी उच्च है परन्तु इसके साथ-साथ परिवहन मार्ग, खनिजों

की उपलब्धता ने भी जनसंख्या घनत्व को बढ़ाने में सकारात्मक भूमिका निभाई है। स्पष्ट है कि राजस्थान के जनसंख्या घनत्व में पायी जाने वाली क्षेत्रीय भिन्नता यहाँ के प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक कारकों में पाई जाने वाली भिन्नता का परिणाम है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं कि शोध- परिकल्पना "राजस्थान में जनसंख्या घनत्व यहाँ की औसत वार्षिक वर्षा की मात्रा का अनुगामी है," केवल आंशिक रूप से ही सत्य है।

#### सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, डॉ. गोपीनाथ, 1981; राजस्थान का इतिहास, पृ. 15, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, दिल्ली।
2. वही, पृ. 16।
3. राजस्थान थ्रू दि एजेज, पृ. 42-43।
4. भल्ला डॉ. एल.आर. 2008, राजस्थान का भूगोल पृ. 7 कुलदीप पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
5. इम्पीरियल गजट, राज. प्रो.सि. पृ. 1।
6. साईवाल, डॉ. स्नेह, 2015, राजस्थान का भूगोल, पृ. 1.13, कॉलेज बुक हाउस, जयपुर।
7. वही, पृ. 51।
8. शर्मा, एच.एस. शर्मा एम.एल. 2015, राजस्थान का भूगोल, पृ. 108-110।
9. पंडा, डॉ. बी.पी., 2007, जनसंख्या भूगोल, पृ. 62, 63 हिन्दी ग्रंथ आकदमी, भोपाल।
10. भारत की जनगणना-2011।
11. साईवाल, डॉ. स्नेह, 2015, राजस्थान का भूगोल, पृ. 8.15, कॉलेज बुक हाउस, जयपुर।
12. शर्मा, एच.एस. शर्मा एम.एल. 2015, राजस्थान का भूगोल, पृ. 274-275।